

हा, असीं सिंधी आहियूं सिंधी हुजण ते फख्र: हिक अज़ीम सफर

एपिसोड 4: सिंधु सभ्यता – विश्व का प्रथम 'लोकतंत्र', वैश्विक व्यापार और अखंड भारत के शिल्प का जन्मदाता

एपिसोड 4: सिंधु सभ्यता – विश्व का प्रथम 'लोकतंत्र', वैश्विक व्यापार और अखंड भारत के शिल्प का जन्मदाता



जयप्रकाश बूलचंदानी
9649457589

हा, असीं सिंधी आहियूं
सिंधी हुजण ते फख्र: हिक अज़ीम सफर

सिंधु घाटी की सभ्यता केवल मिट्टी के खंडहरों की कहानी नहीं है, बल्कि यह हमारे पूर्वजों के उस विराट मस्तिष्क की गाथा है जिसने आज से 5,000 साल पहले दुनिया को 'सभ्यता' का सही अर्थ समझाया था। जब हम इस इतिहास की गहराई में उतरते हैं, तो सबसे गौरवशाली तथ्य यह उभर कर आता है कि यह दुनिया का पहला लोकतांत्रिक और समतावादी समाज था। मिस्र या मेसोपोटामिया की तरह यहाँ कोई एक तानाशाह राजा या खौफनाक फिरौन नहीं था। खुदाई में बड़े महलों या भव्य मकबरों का न मिलना यह सिद्ध करता है कि हमारे पूर्वजों ने संसाधनों का उपयोग किसी एक व्यक्ति की भव्यता के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज की सुविधा, स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिए किया था। यहाँ फैसले 'तलवार' से नहीं, बल्कि 'सहमति' और 'व्यापारिक परिषदों' के माध्यम से लिए जाते थे।

नगर नियोजन की बात करें तो, सिंधु घाटी के इंजीनियरों ने जो मानक स्थापित किए, वे आज भी आधुनिक विज्ञान को चुनौती देते हैं। उन्होंने ग्रिड प्रणाली के आधार पर शहरों का निर्माण किया और दुनिया में पहली बार 'पक्की ईंटों' व मानक नाप-तोल का आविष्कार किया। लेकिन इस सभ्यता की शक्ति केवल उनके शहरों तक सीमित नहीं थी; हमारे पूर्वज उस समय के 'ग्लोबल ट्रेड लीडर्स' भी थे। लोथल के रूप में उन्होंने दुनिया का पहला समुद्री बंदरगाह बनाया, जहाँ से हमारे जहाज अरब सागर को चीरते हुए मेसोपोटामिया और मिस्र तक व्यापार करते थे। पूरी सभ्यता में एक समान वजन के बाट (Weights) और व्यापारिक मुहरें (Seals) यह प्रमाणित करती हैं कि ईमानदारी और 'स्टैंडर्डाइजेशन' हमारे पूर्वजों ने ही दुनिया को सिखाया था।

यही वह समय था जब भारत की कला और कारीगरी की नींव रखी गई। चन्दुदड़ों में बनने वाले बारीक मनके (Beads) आज जयपुर और गुजरात के आभूषणों में चमक रहे हैं। 'नृत्य करती कन्या' को ढालने की वह प्राचीन तकनीक आज दक्षिण भारत की मूर्तिकला में जीवित है। दुनिया में सबसे पहले कपास उगाने और सूती वस्त्र बुनने का जो हुनर हमारे पूर्वजों ने दिखाया, वही आज भारत के वस्त्र उद्योग की आत्मा है। 'अजरक' की प्रिंटिंग से लेकर मिट्टी के बर्तनों की चित्रकारी तक, भारत का हर हस्तशिल्प उस प्राचीन सिंधु हुनर का ही एक विकसित रूप है। हमारे पूर्वजों ने साबित किया कि एक महान शक्ति बिना किसी युद्ध के, केवल 'तर्क, कला और व्यापार' के बल पर भी खड़ी की जा सकती है।

इतिहास की किताबों में अक्सर इस महान सभ्यता के 'अंत' की चर्चा की जाती है, लेकिन हकीकत में यह सभ्यता कभी मरी ही नहीं, बल्कि इसका 'विस्तार' हुआ। जब प्राकृतिक बदलावों के कारण कठिन समय आया, तो हमारे पूर्वजों ने हार मानने के बजाय 'अनुकूलन' को चुना। वे अपने साथ अपनी वास्तुकला, अपना व्यापारिक कौशल और अपने उच्च मानवीय मूल्य लेकर अखंड भारत के कोने-कोने में फैल गए। आज जो सिंधी समाज दुनिया भर में अपनी व्यापारिक सूझबूझ, शांतिप्रिय स्वभाव और लोकतांत्रिक सोच के लिए जाना जाता है, वह सीधे उन्हीं पूर्वजों की देन है। हम उन खंडहरों की संतानें नहीं हैं, बल्कि हम उस अजेय बौद्धिक चेतना के वारिस हैं जिसने वक्त की हर मार को सहकर भी मानवता के दीपक को जलाए रखा।